Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Recognized International Peer Reviewed Journal   Impact Factor 5.98
Online Available at www.cmrj.in
ISSN No. 2456-1665

समकालीन कहानी तथा मैत्रेयी पुष्पा कहानी साहित्य

डॉ. परवीन याकुब शेख अन्सारी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बदनापूर

भूमिका :

सन् १९५० की बात हैं । उससे पहले भारत अंग्रेजों के अधीन था । सन् १५ अगस्त १९४७ में अंग्रेजों की दासता से भारत मुक्ति पाकर एक स्वतंत्र राष्ट्र की चेतना लेकर उभरा है । पेड़-पौधों में स्वतंत्रता की नई कलियाँ खिलने लगी । फूलों में महकती खुशबू निकलने लगी । गरीब साँस ढीला छोड़कर दो वक्त की रोटी खाने लगे । अमीर खुले आम मेलजोल से बर्ताव करने लगे । आजादी तो मिल गयी, परन्तु सौदा बड़ा महँगा पड़ गया है । सारे भारत को रामराज्य करने निकले गाँधी की हत्या की गयी । तब से देशी भाईयों में दुश्मनी फैलने लगी । दिन दहाड़े मारपीट करने लगे । इन सबको नजरंदाज करते हुए लेखक अपनी लेखनी उठाकर तरह-तरह की कहानियाँ बनाकर लिखने लगे । प्रेमचन्द जैसे 'कलम का सिपाही' हिन्दी साहित्य को ही रोज की मजदूरी समझने लगे । प्रेमचंद, प्रसाद, बंग महिला, भारतेन्दु, द्विवेदी, यशपाल, अमृतलाल नागर, भगवतीचरण वर्मा, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा जैसे जाने-माने साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य में महंती भूमिका निभायी है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लेखक जिस मानसिक ऊहा-पोह से गुजर रहा था, उस पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालने से बात और ज्यादा स्पष्ट होती है । इसके संबंध में कमलेश्वर का कहना हैं कि " स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही देश का वैचारिक पुनर्जन्म हुआ । आजादी केवल राजनीतिक मूल्य के रूप में स्वीकृत नहीं हुई थी, बल्कि विचारों की एक नवक्रान्ति का सपना भी उससे जुड़ा हुआ था ।....उधर इतिहास के क्रम में जो कुछ झूठा, विघटित, कुण्ठित और रूढ़ था, उसे अस्वीकार किया और भारतीय संविधान ने नये समाज की संरचना की वैचारिक नींव डाली । इस आजाद देश को लेकर लेखकों ने साहित्य में बहुत ही कलात्मक ढंग से चित्रित करने लगे हैं । कहना न होगा कि परंपरा के प्रति यह अवैज्ञानिक दृष्टि से ही आधुनिकता का शुभारंभ था । आधुनिकता का यह जीवन मूल्य साहित्य की सभी विधाओं में देखा जा सकता है । कथा-साहित्य में यह और भी प्रमुख बन चुकी हैं । देश विभाजन से इस रचनाकार के लिए एक बहुत ही बड़ा झटका था । जाति के नाम

पर, सांप्रदायिकता के तौर पर भयंकर नरसंहार और यह एक अमानवीय त्रासदी थी । सीमापार एक-दूसरे के आत्मीय संबंधों को ऐसे जख्म देकर छीन लिए थे, स्वतंत्र पुनर्निमाण के सपनों को संजोकर चलनेवाले आज तक ढंग से उभर नहीं पाये हैं । आज भी इस दर्द पर अनेक नये अनजाने कोणों से कथा - सृजन हो रही हैं । कमलेश्वर जी कहते हैं- "जिस ढंग से हमें स्वतंत्रता मिली और उसके साथ ही सांप्रादायिक दंगों और हिन्दू-मुस्लिम जनता का स्थानान्तरण हुआ उससे सब कुछ अव्यवस्थित होकर बिखर गया था । एक वर्ग इस आजादी को झुठी मानता था और दूसरा, अवसरवादी राजनीति में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा था । साहित्य में प्रगतिशील और प्रतिषियावादी दो ही तरह के लेखक थे और स्पष्ट बंटा हुआ था, लेकिन दोनों ही वास्तविकता से कट गये थे ।.....नये कथाकारों ने अपने अंदर ही घुटते व्यक्ति को निकालकर समाज में लाकर प्रतिष्ठित किया और प्रगतिशीलता की घोषणाओं को व्यक्ति के अनुभवों में तलाश किया । यानी आदमी के अनुभव को सामाजिक संदर्भों के साथ प्रामाणिक बनाया ।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में लेखकों के साथ ही लेखिकाएँ भी अपने हाथ में लेखनी उठाकर भोगे हुए जीवन के यथार्थ को यथाप्रकार लिखने लगी । पुरुष के सामने नौकरी पेशा से जीवन गुजारने लगी । आर्थिक रूप से दुर्लभ वह सबल होने में सक्षम रहीं । नारी ने अस्मिता का अनुभव किया । घर से भी बाहर का वातावरण उसे अधिक मुक्त करने लगा । पुराने सांचों में छटपटानेवाली आत्मा अभिव्यक्ति के लिये व्याकुल होने लगी आजादी के बाद भारतीय सभी भाषाओं में स्त्री की मुक्ति का प्रश्न, साहित्य के केन्द्र में आया है । विवाहपूर्व प्रणय वातावरण की कल्पना, युवा मन को उत्तेजित करने लगी । साहित्य में लेखिकाओं के सीमित परिवेश के बारे में डॉ.ज्योतिष जोशी कहते हैं- "यह भूमि अनेक प्रश्नों से निर्मित हुई है । इसलिए आँसू खोजना यहाँ व्यर्थ सिद्ध होगा । पुरुष और स्त्री की बराबर प्रतियोगिता और अधिकार की माँग का यह साहित्य जीवन-जगत के अनेक प्रश्नों से भरा पड़ा है । "३ आजादी मिलकर पचास साल गुजर गये फिर भी औरत को संपूर्ण रूप से स्वतंत्रता नहीं मिली है । सदियों पदले अंग्रेजों के कैद में रहकर अब स्वजन पुरुष के दबाव में जकड़ी जीवन बिता रही है । आज भी लेखिकाएँ भारतीय प्रत्येक भाषा में लिखकर अपनी स्वतंत्रता की माँग रखती आ रही है ।

हिन्दी साहित्य में प्रमुख रूप से उपन्यास के तीन युग माने जाते हैं- 'पूर्व प्रेमचन्द युग, 'प्रेमचन्द युग' तथा 'प्रेमचन्दोत्तर युग' । कहानी साहित्य में जितने भी आन्दोलन हुए हैं, वे सभी आजादी के बाद के है । नई कहानी, अकहानी, साठोत्तर कहानी, सहज कहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, सक्रिय कहानी और समसामायिक कहानी आदि । सन् १९६० से दस साल बाद 'सत्तरोत्तर कहानी' नाम भी दिया गया है । कहानी

के इन विविध आन्दोलनों में लेखकों के साथ ही लेखिकओं का नाम भी प्रचुर मात्रा में बढ़ गया है । इसके संबंध में शशिकला राय का कहना है- "हिन्दी में बीसियों लेखिकाओं ने सैंकड़ों कहानियों, दर्जनों उपन्यासों में इस संवेदना को अभिव्यक्ति दी । ४ लिखनेवाले लेखक हैं- निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी, धर्मवीर भारती, रवीन्द्र कालिया, गंगाप्रसाद विमल, ज्ञानरंजन, दुधनाथ सिंह, जगदीश चतुर्वेदी, रामदास मिश्र, अवधनारायण मुद्‌गल, हिमांशु जोशी, रमेश बक्षी, गिरिराज किशोर आदि हैं । साठोत्तर हिन्दी कथा - साहित्य में लेखिकाओं का भी योगदान रहा है ।

कहानी-उपन्यास के विविध आन्दोलनों में आनेवाली लेखिकाएँ प्रमुख हैं- उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, मृणाल पांडे, सूर्यबाला, शशिप्रभा शास्त्री, दीप्ति खण्डेलवाल, सुनिता जैन, कुसुम अंसल, प्रभा खेतान, मालती जोशी, मेहनिसा परवेज, निरुपमा सेवती, चन्द्रकान्ता, मैत्रेयी पुष्पा आदि । कतिपय लेखिकाओं ने विविध आयामों से नारी मुक्ति की समस्याओं को साहित्यिक रूप दिया है । साठोत्तर हिन्दी साहित्य एक नये दौर की संघर्षशील और विद्रोही चेतना के विभिन्न पहलुओं को उठाया गया है । इनकी कहानियों में विद्रोह, आक्रोश एवं कलात्मक सहजता की लय मिलती है । "लेकिन ऐसा लगता है कि ये समकालीन महिला कथाकार कहानी के माध्यम से नारी शोषण, उसके दु:ख-दर्द, मानवीय अधिकार की समस्याओं, मूल्यों के संषमण आदि अपनी कहानीयों द्वारा वाणी देने के लिए प्रतिबद्ध है । किसी 'आंदोलन' के घेरे तक ये कहानीकार सीमित नहीं रहती ।

मैत्रेयी पुष्पा :

समकालीन भारतीय रचनाकारों में एक नया नाम मैत्रेयी पुष्पा ने अपने लेखन मे अधिकतर नारी को ही केन्द्र में रखा है । ' चिन्हार' ललमनियाँ तथा कहानियाँ, गोमा हँसती है आदि मैत्रेयी के प्रमुख कहानी संग्रह है । तथा 'स्मृति दंश', 'बेतवा बहती रही', 'इदन्नमम', 'चाक', 'झुलानट', 'अल्मा कबुतरी ' 'अगनपाखी', 'विजन', 'कही ईसुरी फाग', आदि मैत्रेयी के प्रमुख उपन्यास है।

'चिन्हार' इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संकलित है । इसमें अपना-अपना आकाश, बेटी, सहचर, आक्षेप, कृतज्ञ, भँवर, सफर के बीच, केतकी, बहेलिये, मन नाहिं दस-बीस, हवा बदल चूकी है, चिन्हार आदि कहानियाँ है ।

'बेटी' कहानी में प्रमुख पात्र मुन्नी है । जो पाँच भाइयों की एकलोती बहन है। मुन्नी के माता-पिता पाँचो लडकों को स्कूल में भर्ती करवाते हैं किन्तु मुन्नी की इच्छा होते हुए भी उसे केवल वह लडकी होने के कारण

शिक्षा से वंचित रखते हैं । मुन्नी के माता-पिता मुन्नी का विवाह कर मानो सर से कोई बहुत बड़ा बोझा उतार दिया हो का ही अनुभव करते हैं ।

मुन्नी के पाँचो भाई पढ़लिखकर बड़े होते हैं तथा उनकी शादियाँ हो जाती है तो हर कोई अपना-अपना अलग घर बसाते हैं वे अपने माता-पिता को अपने साथ रखने के लिए तैयार नहीं होते । बुढापे की अवस्था में माता-पिता की इस तरह दुर्दशा मुन्नी सह नहीं पाती । अतः वह माता-पिता की सेवा के लिए अपनी बेटी को गाँव में रखती है । इस कहानी के माध्यम से मैत्रेयी जी ने संकुचित विचारों एवं संस्कारों का चित्रण किया है ।

‘सहचर' कहानी में चौदह साल की सुंदर छवीली की शादी भोले भाले बंसी से होती है । छवीली तथा बेंसी का वैवाहित जीवन अच्छी तरह से बीतता है किन्तु उनके सुखी संसार को मानो किसी की नजर लगी हो । अचानक छवीली को बुखार आ जाता है । डॉ. की जाँच के बाद पता चलता है कि छवीली के पैर में गेगरीन हुआ है और पैर काटने के सिवाय उसका कोई दूसरा उपाय नहीं है । ऐसा न करने पर छवीली की जान को भी खतरा हो जाता है ।

बंसी के पिता छवीली को ऐसी हालत में बंसी को बिना बातये मायके छोड आते हैं । तथा कुछ ही दिनों में अपने बेटे बंसी के लिए नये रिश्ते की तलाश करते हैं । क्योंकि अपाहिज बहु उनके किसी काम की नहीं रह जाती । भोला भाला बंसी छवीली से बेहद प्रेम करता है वह उसके विरह में विक्षिप्त सा हो जाता है और अपनी दूसरी शादी के मंडप से भाग जाता है । वह भागकर छवीली के पास पहुँच जाता है तथा उसे कुत्रिम पैर बिठाने के लिए शहर ले जाता है । इस कहानी मे पुराने विचारों को तोड़कर आधुनिक विचारों को अपनाने वाले युवक का चित्रण किया है ।

'बहेलिये' कहानी में विधवा गिरजा अपनी बहन के बेटे सूरज को पढ़-लिखाकर बड़ा करती है । वह उसे पुलिस अधीक्षक बनाती है । क्योंकि उसने गाँव में ही बहुत लोगों के साथ अन्याय होता हुआ देखा है। वह अन्याय को कतई सह नहीं पाती वह गाँव की प्रधान बनकर लोगों के साथ न्याय करना चाहती है । वह यहीं उम्मीद अपने पुत्र समान भतीजे सूरज से रखती है । जब वह सूरज के पास जाती तो देखती है कि उसका भतीजा सूरज भी भ्रष्ट व्यवस्था में शामिल हो चुका है तो वह टूट जाती है । उसकी सारी उम्मिदों पर पानी फिर जाता है । वह निर अपने गाँव वापस लौट आती है ।

'मन नँहि दस बीस' कहानी की प्रमुख पात्र चन्दना अपने बाल सखा स्वराज से प्रेम करती है किन्तु उसके इस प्रेम को चन्दना के पिता एवं समाज स्वीकार नहीं करता । छोटी जाती में जन्मे स्वराज को चन्दना के पिता गाँव छोडकर जाने के लिए मजबूर करते हैं तथा चन्दना की शादी अपनी बिरदारी में करवा देते हैं ।

चन्दना मन में अपने प्रेम को दबाएं हुए अपने पिता की इज्जत की खातिर ससुराल चली जाती है । ससुराल के लोग चन्दना के पूर्व जीवन को लेकर उसका छल करना शुरू करते हैं । यहाँ तक की चन्दना को जान से मार डालने की साजिश भी करते हैं । चन्दना ससुराल के लोगों से तंग आकर विद्रोह पर उतर आती है तथा अपने पति और देवर को खाने में जहर देकर उनकी हत्या करती है।

ललमनियाँ इस कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ है । इसमें - रिजक, पगला गई है भागवती, छाँह, बोझ, ललमनियाँ, बिछुडे हुए, बारहवीं रात सेंध, सिस्टर तथा तुम किसकी हो बिन्नी आदि है । 'ललमनियाँ' कहानी पुरुष व्यवस्था मे छली जानेवाली स्त्री की कहानी है । प्रमुख पात्र मोहरो गाँव के शादी ब्याह में ललमनियाँ नामक गीतपर नाचती है तथा उसीसे तथा अपने परिवार का गुजर बसर करती है । ऐसे ही किसी शादी में मोहरो का नाच तथा सुंदरता देखकर जोगेश उसपर फिदा हो जाता है तथा अपने माता-पिता की अनुमति लिए बिना ही उससे शादी कर लेता है ।

मोहरो जोगेश के माता-पिता द्वारा ठुकरा दी जाती है । जोगेश उसे पहले अलग से कमरा किराये पर लेकर रखता है किन्तु बाद में कुछ ही दिनों में मोहरो से मीलना जुलना तक बंद कर देता है । मोहरों अपने गाँव वापिस लौट जाती है तब उसके गर्भ में जोगेश का अंश पल - बढ रहा होता है । मोहरो कन्या को जन्म देती है किन्तु जोगेश उसे देखदने तक नहीं आता । मोहरो की बेटी छ : साल की हो जाती है किंतु जोगेश दुबारा लौटकर मोहरो के पास नहीं जाता, न ही उसकी कोई खबर लेता है । एक दिन ऐसे ही उसे अपनी बेटी से मालूम हो जाता है कि यह शादी जोगेश की ही है । वह अपना दर्द किसी से न कहकर बेसुध नाचती रहती है ।

'तुम किसकी हो बिन्नी ?' यह मैत्रेयी पुष्पा की मर्मस्पर्शी कहानी है । भारतीय समाज मे पुरुष प्रधान व्यवस्था में बेटे का अन्योन्य महत्त्व है । बेटे से वंश चलता है यह धारणा मन में रखते हुए बेटे की अपेक्षा और प्रतीक्षा की जाती है। बेटे के स्थानपर बेटी का जन्म हुआ तो उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है । स्वयं माँ भी जो एक औरत है, ऐसी ही माँ का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने तुम किसकी हो बिन्नी' के माध्यम से किया है ।

'बोझ' कहानी में विभक्त परिवार मे पति-पत्नी दोनों नौकरी-पेशा होने के कारण बच्चों की परेशानी को केन्द्र में रखा है । तीन वर्ष के बालक अक्षय के माता-पिता दोंनों नौकरी वजह से बाहर रहते हैं । अत:

अक्षय को सँभालने के लिए घर में कोई नहीं है । उसे मजबूरन शिशु गृह में रखना पड़ता है । शिशु गृह में अक्षय अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है वह स्वयं को अकेला मानता है और हमेशा भयभीत रहता है । अक्षय के माता-पिता उसे ठीक से समय नहीं दे पाते किन्तु अक्षय में अच्छे गुणों की एवं अनुशासन की उम्मीद करते हैं । अक्षय शिशुगृह और अपने घर मे भी सहज नहीं रह पाता ।

'बारहवीं रात' कहानी की प्रमुख पात्र सीता का विवाह सुरेन्द्र से होता है । सुरेन्द्र के पिता ने शादी तय होते समय दहेज एक लाख रूपये पक्का करवाया था सीता के पिता आर्थिक अभाव के कारण दहेज की पूरी रक्कम शादी के समय नहीं दे पाते । अतः ससुराल मे दहेज के लिए सीता का छल शुरू होता है । सीता बी.ए उत्तीर्ण लडकी ससुराल वालों की हमेशा के छल से तंग आकर आत्महत्या कर लेती है । सीता के सास ससूर सीता को मरे ठीक से तेरह दिन भी नहीं होते की सुरेन्द्र की दूसरी शादी की बात करते हैं । इस कहानी के माध्यमसे दहेज प्रथा में जकड़े हुए परिवार का चित्रण किया है ।

'गोमा हँसती है' इस कहानी संग्रह में कुल दस कहानियाँ संकलित है । सभी कहानियों में लगभग नारी जीवन को ही केंद में रखता है । इनके कहानियों के नारी पात्र अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश में दिखाई देते हैं । ' ताला खुला है पापा', 'शतरंज के खिलाडी', 'राय प्रवीण', 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी', 'साँप सिढी', 'रास', 'गोमा हँसती है', 'अब फूल नहीं खिलते' आदि कहानियाँ संकलित है ।

'ताला खुला है पापा' इस कहानी में सत्रह की बिन्दो बारहवी कक्षा में पढ़ती है । उसी के साथ अरविन्द पढ़ाई में काफी तेज लडका है । बिन्दो के घर के सदस्य अरविन्द की होशियारी तथा उसकी सादगी को पसंद करते हैं । बिन्दो ब्राह्मण जाति की लड़की है । तो अरविन्द नाई है । बिन्दो और अरविन्द एक दूसरे को पसंद करते हैं यह बात जब बिन्दो के पिता को पता चलती है तो वे बिन्दो का घर से बाहर निकलना बंद कर देते हैं । यहाँ तक की बिन्दो को कमरे में बंद करके बाहर से ताला लगा देते हैं । इस कहानी में मन में वर्ण भेद रखते हुए पिता द्वारा छली गयी बेटी का वर्णन किया है ।

'उज्रदारी' कहानी में शान्ती के पति श्याम - नारायण की जब मृत्यु हो जाती है तो विधवा शान्ती और उसके बेटे सोमू को अपने ही घर में नौकरों की तरह रहना पडता है । शांति के जेठ बद्रीप्रसाद अपने भाई की मृत्यू के बाद घर के सारे नौकर-चाकर निकाल देते हैं तथा सोमू का स्कूल बंद करवाकर घर का सारा काम शान्ती एवं सोमू से लेते हैं । शान्ती को वह जमिन-जायदाद में हक देने के लिए भी मना करते हैं ।

शान्ती अपने जेठ के अत्याचारों से तंग आकर एक दिन सोमू को साथ लेकर घर से रातोरांत भाग जाती है । वह दूसरे गाँव में फिर से सोमू का नये स्कूल में दाखिला करवाती है और खुद मेहनत-मजदूरी करके अपना तथा अपने बेटे का पेट पालती है । जब दो साल बाद उसे खबर मिलती है कि उसके ससूर मर चुके है और कचहरी से यह फरमान निकला है कि बद्रीप्रसाद कोई और वारिस हो तो कचहरी आकर दावा ठोंके । तब शान्ती अपने हक को वापिस पाने के लिए तहसील कार्यकाल में उज्रदारी की अर्जी लेकर पहुँच जाती है । इस कहानी में अपने हक के लिए लडती हुयी नारी का चित्रण किया है । 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी की प्रमुख पात्र ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती एक पितृविहीन लडकी है । वह पढने के लिए गाँव से बाहर जाती है । वह पढाई में काफी तेज है तथा अन्याय का विरोध करनेवाली लडकी है झरना अपनी कॉपी जाँच करने के लिए गुप्ता सर के पास देती है । कॉपी यह जाँचकर जब वापिस आती है तो वह कापी के पीछे कुछ अश्लील चित्र तथा शब्द लिखे हुए पाती है । वह यह देखकर चुप नहीं रहती वह ऐसी हरकत करनेवाले को सजा दिलवाना चाहती है । अतः वह यह बात प्रधानाचार्य को बताती है एवं स्पष्ट रूप से कहती है कि यह हरकत स्वयं गुप्ता सर की ही हो सकती है उसे उनहीं पर शक है । मामला आगे ज्यादा न बढे इसलिए प्रधानचार्य गुप्ता सर को झरना से माफी माँगने के लिए कहते हैं । यहीं नहीं जब प्रधानचार्य झरना के साथ दुर्व्यवहार करते हैं तो उनके खिलाफ बगावत पर उतर आती है तथा कॉलेज बंद करवाकर प्रधानचार्य को जेल भेजने तक की तैयारी करती है । शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त शोषण और भ्रष्टचार का पर्दाफाश करना कहानी का मुख्य उदेश्य रहा है । लेखिका इसमें पूर्णतः सफल हुयी है ।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में मैत्रेयी ने बुंदेलखंडी ग्रामीण नारी जीवन का चित्रण किया है । उपन्यास की प्रमुख पात्र 'उर्वशी' जो अपने नाम की तरह ही अनुपम सौंदय की मालकिन है किन्तु धोर दरिद्र परिवार मे जन्मी नारी है । उर्वशी उपन्यास के शुरू से अंत तक नसीब से जुझती हुयी नजर आती है । उर्वशी की शादी सर्वदमन से हो जाती है किंतु एक बेटे की माँ बनकर वह विधवा हो जाती है । तकदीर के इस फैसले को वह चुपचाप सहती जाती है किंतु उर्वशी का भाई अजीत अपनी स्वार्थ पूर्ती के लिए उर्वशी की शादी अधेड उम्र के बरजोरसिंह से कर देता है, वह उर्वशी की बालसखी मीरा के पिता होते हैं । उसे अपनी सखी मीरा के घर उसकी माँ बनकर रहना पड़ता है । अंत मे बरजोरसिंह धीरे-धीरे असर करनेवाला जहर वैद्य के हाथों देकर उर्वशी की हत्या कर देते हैं ।

निष्कर्ष :

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री चेतना की प्रमुख हस्ताक्षर है, यह कहना गलत ना होगा । क्योंकी उन्होंने ही शहरी परिवेश तथा पात्रों तक सीमित स्त्री विमर्श के तहत पितृसतात्मक मूल्यों, दोहरे नैतिक मानदंडो, लिंगभेद की कुत्सित राजनैतिक व सामाजिक मान्यताओं एवं अर्न्तविरोधों को झकझोर कर रख दिया है । सदियों से जिस बर्बर विरोधी व्यवस्था ने स्त्री को कदम का हनन किया गया है । उस बर्बर व्यवस्था के खिलाफ सशक्त पात्रों की संरचना कर घमासान युद्ध छेड़ा है । अब तक पुरुष वर्चस्व समाज ने स्त्री को मातृत्व, सतीत्व, नारीत्व का महिमा मंडन कर मोहजाल में फंसाकर गुलाम बना रखा था, उसी मोहजाल को चीर डाला है । उनकी स्त्रियाँ आचरण की पैतृक मर्यादाओं और खोखली परंपराओं की लक्ष्मण रेखाओं को अस्वीकार करती हैं । उनके स्त्री पात्र तन-मन से स्वतंत्रता की मांग करते हैं। सांस्कृतिक एवं धार्मिक वर्चस्व के दोहरे मानदंडों को ललकारती है ।

संदर्भ :

1. डॉ. नामवर सिंह - हिंदी कहानी का विकास और प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, 2000
2. डॉ. मृणाल पांडे - स्त्री-विमर्श और हिंदी कथा साहित्य, वाणी प्रकाशन, 2010
3. डॉ. नरेन्द्र / डॉ. नामवर सिंह (संपादित ग्रंथ)- समकालीन हिंदी महिला कथाकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005